उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक अधिगम अक्षमता को निर्धारित करने में शैक्षिक उपलब्धि, आत्मप्रत्यय, चेतनता एवं तर्क शक्ति की भूमिका का अध्ययन

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट
(डीम्ड विश्वविद्यालय) दयालबाग, आगरा
की पी–एच.डी. उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत
संक्षिप्तिका

2016–2017

निर्देशक

डॉ. मुकेश कुमार गौतम

शोधार्थी

राजकुमार

विभागाध्यक्षा
पेडागोजीकल साइन्सेज

संकाय प्रमुख
शिक्षा संकाय

शिक्षा संकाय
दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़ आगरा–282005

1.0 प्रस्तावना

ज्ञान के प्रसार एवं द्रुत तकनीकी विकास के कारण शिक्षा के क्षेत्र में अनेक समस्याएं उभरती हुई परिलक्षित हो रही है, जिनके निराकरण के लिए दिन–प्रतिदिन अभिनव प्रयोग भी हो रहे हैं। शिक्षण को सफल एवं उन्नत बनाने के लिए शिक्षण– अधिगम प्रक्रिया में भी उपयुक्त अन्वेषण होते रहते हैं। स्पष्ट हैं कि शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में शिक्षण साधनों की अहम भूमिका सदैव अविवादास्पद रही है और इसी बदलते स्वरूप एवं परिणामोन्मुखी शिक्षा के विकास हेतु देश की अनेक समस्याओं की जिजीविषा ने शैक्षिक–तकनीकी विषय की ओर सभी का ध्यान आकर्षित किया है। किन्तु बदलते परिवेश में भी इस तथ्य को विस्मृत नहीं किया जा सकता है कि प्राचीन भारतीय जिजीविषा अपने दर्शन की पृष्ठभूमि के आधार पर यह सिद्ध करते चले आ रहे हैं कि मानव शरीर में निहित पूर्ण चेतना उसे सृष्टि का सर्वोच्च प्राणी उद्घोषित करने हेतु बाध्य करती है। इस बुद्धिशील प्राणी को समझने, उसके व्यक्तित्व के अतिक्रमण की दृष्टि से परिवर्तन करने हेतु भी भारतीय दार्शनिकों एवं शिक्षाविदों ने अनेक उपाय प्रस्तुत किये हैं, जिसके द्वारा मानव के स्वरूप और उसके व्यक्तित्व–निर्माण में उसे चेतनता, तर्क–शक्ति की भूमिका को समझा जा सके। ज्ञातव्य है कि प्राचीन भारत के ऋषियों को इस तथ्य का ज्ञान था कि मानव मनश्चेतना ही सर्वज्ञान स्रोत है। वह इस तथ्य से भी अवगत थे कि सामान्य मनश्चेतना की स्थिति में व्यक्तिगत् इन्द्रियानुभूत के भावात्मक तथा वस्तुपरक घटक होते हैं अतः उन्होंने व्यक्तिगत इन्द्रियानुभूति को सत्य ज्ञान का विश्वसनीय साधन नहीं माना है। आज के मानव चिंतन ने भी यह स्वीकार कर लिया है कि मनुष्य के हाथ में एक अभेध–शक्ति आ गयी है और अब वह दिन दूर नहीं जब वह इस शक्ति के द्वारा सृष्टि के रहस्य को जान लेगा, परन्तु सामान्य बोध वैज्ञानिक एवं संश्लेषणात्मक चिंतन की गरिमा और गहराई को विस्मृत कर उठा है। जिसके कारण शिक्षा को उस दिशा में ले जाना असंभव हो रहा है, जहाँ प्रतिभा सम्पन्न एवं आचरणशील व्यक्ति उत्पन्न किये जा सकें। व्यक्ति की चेतना, मंनस् और मस्तिष्क को समझने के उपाय संभव नहीं है। चेतना एक अभौतिकीय तत्व है, जो अविभाज्य, निष्क्रिय, शान्त और अवर्णनीय है। इक्कीसवीं शताब्दी को

बालकों का युग कहा जाता है। बालकों पर ही किसी छोटे समुदाय अथवा राष्ट्र का भविष्य निर्भर करता हैं, आज प्रत्येक देश बालकों के व्यक्तित्व में उचित विकास लाने के लिए प्रयत्नशील है परन्तु प्रत्येक बालक की अपनी अलग योग्यताएँ एवं क्षमताएँ होती हैं। जिनके अधिकतम विकास हेतु उनके जन्म लेते ही उन्हें सिखाने की क्रिया प्रारम्भ हो जाती हैं, लेकिन प्रत्येक बालक सीखता अपनी योग्यता एवं क्षमता के अनुसार ही है। सीखने की इस योग्यता में असमर्थता ही बालकों को अधिगम में अक्षमता की संज्ञा प्रदान कर देती है अधिगम में असमर्थ बालक बौद्धिक रूप से विशिष्ट बालकों की श्रेणी में आते हैं। इसलिए उन्हें विशेष सामाजिक वातावरण, देखभाल व अनुदेशन की आवश्यकता होती है। लेकिन समस्या यह है कि अधिगम में असमर्थ बालक भी सामान्य बालकों के साथ सामान्य कक्षाओं में अध्ययन करते हैं। अधिगम अक्षमता वाले बालक सामान्य बालकों से पूर्णतः भिन्न होते हैं। तथापि उनसे सामान्य बालकों के समान ही कार्य व व्यवहार की आशा की जाती है। यूँ तो वर्तमान वैज्ञानिक युग के चलते प्रत्येक बालक दबाव का अनुभव करता है परन्तु अधिगम अक्षमता बाले बालक का शैक्षिक उपलब्धि स्तर भी कम रहता है। अतः उनकी यह स्थिति उनके सामाजिक विकास व आत्म प्रत्यय में बाधा उत्पन्न करती है। सामान्यतः अधिगम अक्षमता वाले बालक सभी के द्वारा स्वीकृत व प्रशंसित नहीं होते हैं ऐसे समय में जब बालक को अपने भविष्य हेतु सर्वाधिक दृढ़ आधार की आवश्यकता होती है। वे समाज व विद्यालय द्वारा उपेक्षित किये जाते हैं। जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि व आत्म प्रत्यय में कमी आ जाती है। अतः वर्तमान समय में राष्ट्र के समुचित एवं सम्पूर्ण विकास के लिये अधिगम अक्षमता वाले बालकों को विशेष प्रेरणा व प्रोत्साहन की आवश्यकता है बल्कि अधिगम में अक्षमता वाले बालक बौद्धिक रूप से विशिष्ट होते हैं। अतः उन्हें विशेष सामाजिक वातावरण और विशेष सेवाएँ उपलब्ध करायी जानी चाहिए ताकि वे भी अपनी योग्यताओं का विकास कर सकें एवं राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकें।

1.1 अधिगम अक्षमता

फेडरल रजिस्टर (1977) ने इस शब्द की व्याख्या इस प्रकार की है–"अधिगम अक्षमता का अर्थ एक अथवा एक से अधिक आधारभूत मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के असंतुलन से है।

जिसमें समझने, लिखने, बोलने और सुनने की अक्षमता सम्मिलित है। यह असंतुलन अधिकांशतः बालक की सुनने, सोचने, पढ़ने, लिखने और गणितीय गणना एवं प्रेषित सूचनाओं को समझाने की सामान्य योग्यता रखते हैं।"

अधिगम अक्षमता वाले बालक वे बालक हैं जो लिखने, बोलने, सुनने, समझने, सम्प्रेषण तथा गणितीय गणना करने में सामान्य बुद्धि वाले होते हुए भी अक्षमता का अनुभव करते हैं। साथ ही कुछ विशिष्ट शैक्षिक समस्याओं से ग्रस्त हैं। जैसे– स्वाद हीनता, संख्या विषयक अक्षमता, सम्प्रेषण तथा पढ़ने लिखने में अक्षमता।

1.2 शैक्षिक उपलब्धि

शैक्षिक उपलब्धि वह स्थान है जो कि विशेष या पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों में व्यक्ति के ज्ञान, संयम व कौशल का मापन करना है।

ट्राचलर,(1960) के अनुसार– "अधिक विशिष्ट रूप से कहा जा सकता है कि शैक्षिक उपलब्धि वार्षिक परीक्षा में विद्यालयों द्वारा अंकों का समग्र योग होता है।"

एनस्टासी, (1961) के अनुसार– "शैक्षिक उपलब्धि विद्यालयों द्वारा प्राप्त सफलता के स्तर का वह मूल्यांकन है जो विद्यार्थियों के शैक्षिक निर्देशों को समझने के प्रयास एवं उनके स्तर व आयु के अनुसार निर्धारित पाठ्यक्रम के लक्ष्यों की प्राप्ति से अभिव्यक्त होता है। जिसका परिणाम उनको वार्षिक परीक्षा में किये गये कार्यों के परिणाम से मिलता है।

सामान्य शब्दों में कहा जा सकता है कि शैक्षिक उपलबिध शैक्षिक संस्थाओं द्वारा प्राप्त सफलता के स्तर का मापन एंव मूल्याकन करना है जो छात्रों के शैक्षिक निर्देशों को समझने के प्रयासों का परिणाम मात्र है।

1.3 आत्म प्रत्यय

परकिन, (1987) के अनुसार– "आत्म प्रत्यय वह प्रत्यक्षीकरण, विश्वास, भावना और अभिवृत्ति है। जिसे व्यक्ति अपनी विशेषताओं के रूप में देखता है।"

आत्म प्रत्यय से आशय है, वे सारे प्रत्यय, विश्वास अभिवृत्तियाँ और भावनाएँ जिसे व्यक्ति स्वयं की विशेषताओं के भाग के रूप में देखता है। यह उसके स्वास्थ्य, शारीरिक आकार, मानसिक योग्यताएँ, शैक्षिक स्तर, व्यवहारगत विशेषताएँ, मानसिक स्वास्थ्य, संवेगात्मक प्रवृत्तियों और सामाजिक आर्थिक स्तर का एक विचार है।

1.4 चेतनता

भारतीय चिंतन में सर्वोच्च सत्ता निरपेक्ष चेतना मानी जाती है। जिसे परम चेतना कहते हें। यह स्वयं सत्तावान है और किसी शारीरिक क्षमताओं द्वारा देखें, सुनें व स्पर्श किये जाने की वस्तु नहीं हैं वह स्वयभू है। इसलिए रहस्यवादियों ने इसे अचिन्तनीय व अवर्णनीय कहा है। यही परम चेतना विभिन्न स्तरों पर अलग–अलग मुद्राओं में अभिव्यक्ति होती है। जैसे– जड़ जगत में वह सुप्त है। प्राण जगत में वह मुस्कराती है। (विशेष रूप से वनस्पति जगत में) परम जगत में वह गतिशील है और मानव जगत में वह चिंतनशील है।

चेतनता की मुद्राऐं हैं– सोना, मुस्कराना, चलना, फिरना और चिंतन करना। यह चेतना एक ओर आवरड़ हैं परन्तु मानव जगत में यह विभिन्न शरीरों में वैयक्तिक चेतना के रूप में प्रतीत होती है। अतः शरीर की सीमा के कारण तथा शरीर धर्म से प्रभावित होने के कारण यह अपने को परम चेतना से पृथक मानती है। यह प्राथक्य ज्ञान भाव अज्ञान था अविद्या है। क्योंकि समग्र जीवन एक है।

व्यवहारिक दृष्टि से चेतनता से आशय जीवात्माया व्यक्तिगत मनश्चेतना की स्थित से है। जिससे व्यक्ति की मानसिकता प्रभावित होती है। इस व्यक्तिगत चेतना को सामान्य रूप से वस्तु परतंत्र माना जाता है अर्थात मानवीय चेतना कभी भी शुद्ध और स्वंय के रूप में दिखायी नहीं देती है तथा नहीं अनुभूत होती है।

1.5 तर्क शक्ति

वुडवर्थ (1945) के अनुसार 'तर्क में तथ्यों तथा सिद्धान्तों के रूप में प्राप्त सामिग्री जो पुनः स्मरण या वर्तमान निरीक्षण अथवा इन दोनों के द्वारा प्राप्त होती है। जो परस्पर मिलाया जाता है और

फिर उसका निरीक्षण कर उचित निष्कर्ष निकाला जाता है।'

गैरट (1968), के अनुसार "मन में किसी उद्देष्य या लक्ष्य को रखकर क्रमानुसार चिंतन करना ही तर्क है।"

सामान्य रूप से तर्क व्यापक, सजीव, गत्यात्मक शक्ति है। तर्क का संसार भौतिक संसार से अधिक यथार्थ है। प्रत्येक तर्क जीवन में एक मूल्य आरोपित करता है और तर्क से ही व्यक्ति के वातावरण अथवा परिवेश का सृजन होता है और विस्तृत अर्थ में तर्क शक्ति से आशय अवधारणाओं, संकल्पनाओं, निर्णयों, सिद्धान्तों आदि में वस्तु जगत को परावर्तित करने वाली सक्रिय प्रक्रिया जो विविध समस्याओं के समाधान से जुड़ी है। विशेष रूप से संगठित मस्तिष्क की उच्चतम उपज से है। मस्तिष्क के अविच्छेद रूप से सम्बन्धित होने के कारण तर्क शक्ति की व्याख्या शरीर के क्रियात्मक अंगों के क्रियाकलापों से पूर्णरूपेण नहीं की जा सकती, यह केवल जैविक विकासक्रम से ही नहीं वरन् सामाजिक विकासक्रम से भी सम्बन्धित है। मनुष्य का तर्क उसकी वाणी के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रखे हुए मूर्त रूप गृहण करता है। उसके परिणाम भाषा में व्यक्त होते हैं। इसमें आकर्षण, विश्लेषण, संशेषण जैसी प्रक्रियाऐं निश्चित कार्मभारों का रूपण, उसके समाधानों की खोज परिकल्पना व प्रत्थक का प्रस्तुतीकरण सम्मिलित है अतः प्रश्न उठता है कि शैक्षिक उपलब्धि, आत्म–प्रत्यय, चेतनता एवं तर्क शक्ति विद्यार्थियों के अधिगम को किस प्रकार प्रभावित करती है। क्या उपरोक्त चारों तत्व विद्यार्थियों की अधिगम अक्षमता के निर्धारक तत्व कहे जा सकते हैं।

1.2 समस्या का प्रादुर्भाव ?

व्यावहारिक रूप से सर्वविदित मान्य सत्य यही है कि मनुष्य शरीर, मन एवं आत्मा का समुच्चय है और उसके विकास का साधन शिक्षा है, चाहे उसे H^3 (Head, Heart, Hand) या R^3 (Reading, Writing, Arithmetic) के संदर्भ में शिक्षाविदों ने स्वीकारा हो अथवा व्यवहार में बांछित परिवर्तन लाने का मात्र साधन माना हो। निश्चित रूप से यह तो सिद्ध ही है कि शिक्षा का सम्बन्ध बालक के जन्म के पूर्व से लेकर उसके परिपक्व नागरिक बनने अथवा जीवन पर्यन्त

रहता है। इसके अतिरिक्त भारतीय चिंतकों की मान्यता यह भी रही है कि शिक्षामात्र भौतिक उपलब्धियों तक ही सीमित न रहकर आत्मचिंतन तक का लक्ष्य निर्धारित करती है। शिक्षित वह है जो प्राथमिक रूप से माता–पिता तथा आगे गुरू से जुडता रहता है, क्योंकि भारतीय शिक्षा केवल परिवेश को ही संतुलित व्यक्तित्व के निर्माण का घटक नहीं मानती, वरन् वह उसके अर्जित संस्कार तथा माता–पिता की शिक्षको भी उसके व्यक्तित्व के निर्माण में प्रमुख कारक मानती है। संस्कारों का क्रमबद्ध निर्माण ही बालक की शिक्षा है। अस्तु यह भी अविवादास्पद तथ्य है कि उत्तम आचरण व संतुलित व्यवहार की संस्कारित शिक्षा तभी संभव है जबकि बालक की मनस–भूमि (मानसिकता) उसी प्रकार की बने जिसके द्वारा अनुकूल समय पर उचित व्यवहार की अपेक्षा की जा सके। प्रत्येक बालक में कुछ जन्मजात योग्यताएं व क्षमताएँ होती हैं जिनके अधिकतम विकास हेतु उनके जन्म लेते ही उन्हें सिखाने की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है लेकिन हर बालक सीखता अपनी योग्यता एवं क्षमता के अनुसार है। सीखने की इस योग्यता में समर्थता एवं असमर्थता ही बालकों को अधिगम में समर्थ एवं असमर्थ की संज्ञा प्रदान कर देती है। अधिगम में अक्षमता वाले बालक बौद्धिक रूप से विशिष्ट बालकों की श्रेणी में आते हैं अतः उन्हें विशेष अनुदेशन एवं देखभाल की आवश्यकता होती है परन्तु समस्या यह है कि अधिगम में अक्षमता वाले बालक भी सामान्य बालकों के साथ सामान्य कक्षाओं में अध्ययन करते हैं जैसा कि **स्किनर (1879)** ने कहा है–"हमारे विद्यालयों में विद्यार्थी अपनी योग्यताओं एवं रूचियों में एक–दूसरे से पर्याप्त रूप से भिन्न होते हैं तथापि अक्सर हम उनसे ऐसा व्यवहार करते हैं जैसा कि वे सब एक से हों।" अधिगम में अक्षमता वाले बालक सामान्य बालकों से पूर्णतः भिन्न होते हैं। तथापि उनसे सामान्य बालकों के समान ही कार्य व व्यवहार की आशा की जाती है यूँ तो वर्तमान वैज्ञानिक युग, माता–पिता की उच्च आकांक्षाओं एवं विद्यालयों में तीव्र–प्रतिस्पर्धा के चलते प्रत्येक बालक अक्षमता एवं दबाव का अनुभव करता है परन्तु अधिगम में अक्षमता वाले बालक सामान्य योग्यताओं से युक्त नहीं है अतः उनमें क्षमता का अभाव रहता है। तथा उनमें अक्षमता की स्थिति उनके सामान्य शैक्षिक एवं सामाजिक विकास में बाधा उत्पन्न करती है। प्रत्येक बालक की अपनी शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक सांस्कृतिक एवं राजनैतिक समस्यायें होती हैं जिसके कारण उसकी

उल्लेखनीय प्रगति नहीं हो पाती है जिनकी प्रगति के लिए बहुत कुछ किया जाना आवश्यक है जैसा कि विभिन्न शोध सर्वेक्षणों यथा– कुरीन (1991), थॉमसन (2005), आइवा (2006), जैसथई (2006), दानोव (2007), पैगफेर (2008), हीमैन (2008), कैपल (2010), ढिल्लन (2012) आदि ने शैक्षिक अधिगम अक्षमता से सम्बन्धित शोध अध्ययन सम्पादित किये हैं।

कुछ शोध सर्वेक्षणों में विधार्थियों के माता–पिता एवं अभिभावक के व्यवसाय एवं परिवार की आय का बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि के सम्बंध में अध्ययन किये गये है यथा – पाल (2000), नलिनी (2001), कल्पना (2002), चितरंजन (2002), मार्गरेट (2002), थॉमस (2005), पलदेवेन (2005), दीक्षित (2006), हिट्ज (2006), ए. जैनिक (2006), वाला निधि (2008), कुशवाह सोनिका (2010), नविता (2010), सरस्वती (2010), किरनलता (2011), आदि के अध्ययन में देखने को मिलता है कि परिवार एवं अभिभावकों की आर्थिक स्थिति बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव डालती है।

कुछ शोध अध्ययनों में प्रौढ़ों में आत्म प्रत्यय का परिवार के वातावरण पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है यथा– जिलियन (2000), हर्मन (2002), सेवत्तो (2002), हुसैन (2007), मिनिस (2008), ब्लैक (2008), सैयद (2011), आदि के शोध अध्ययनों में परिवार के वातावरण का आत्म प्रत्यय के सन्दर्भ में प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

चेतनता से सम्बन्धित शोध अध्ययनों का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि चेतनता शैक्षिक अधिगम अक्षमता को प्रभावित करती है जैसा कि– जैकेनहीप (1978), वेलाफ जे (1994), विलीस एच. (1994), चार्ल्र्स डी.जे. (1995), कोटेरिल (1995), गवन (1995), लौवी ई.जे.(1995), मेटजिन्गर(1995), वेलमन्स (2005), डीकमैन (2009), डीलैन्सी (2011)स्मिथ (2014), यद्यपि के अध्ययनों में देखने को मिलता है शैक्षिक अधिगम अक्षमता को निर्धारित करने में चेतना विज्ञान की अहम भूमिका होती है।

शैक्षिक अधिगम अक्षमता को निर्धारित करने में तर्क शक्ति की भूमिका से सम्बन्धित शोध अध्ययनों का अध्ययन करने पर यह तथ्य स्पष्ट होता है कि चेतनता शैक्षिक अधिगम अक्षमता को प्रभावित करती है जैसाकि– कुन टी (1994), शैनी एन डब्ल्यू (2005), लियो एम बी (2006), स्मिथ

सी.जी. (2008), वालर (2009), ब्लेविम (2009), हारलैण्ड (2010), ट्रिजमैजिस्टस एच. (2012), आदि के अध्ययनों से पता चलता है कि चेतना विज्ञान अधिगम अक्षमता को प्रभावित करता है।

प्रत्येक बालक के जीवन में महत्वाकांक्षा, परिश्रम, सफलता एवं असफलता के अतिरिक्त एक अन्य शब्द विशेष रूप से जुड़ा रहता है। जिसे अधिगम अक्षमता के नाम से जाना जाता है। यह अक्षमता छात्रों में समाज के साथ सामंजस्य न बना पाने के कारण होती है। क्योंकि वे समाज से अकेलापन महसूस करते है।

यद्यपि अधिगम अक्षमता का अर्थ पूर्णतः अयोग्य नहीं है, क्योंकि लर्निंग डिसएबल का अर्थ डिफरैन्टली एवल हो सकता है। कई बार अधिगम में अक्षमता वाले बालक प्रतिभाशाली भी हो सकते हैं। क्योंकि सम्भव है कि वे और क्षेत्रों में विशिष्ट योग्यता रखते हो। वर्तमान समय में हो रही प्रतिभा खोज परीक्षायें इसका उदाहरण है। अतः विभिन्न देशों में अधिगम में अक्षमता का प्रयोग भिन्न प्रकार से किया जाता है। अधिगम में अक्षमता शब्द का प्रयोग संयुक्त राज्य अमेरिका में विशिष्ट प्रकृति की शैक्षिक समस्याओं के सन्दर्भ में किया जाता है। जैसे कि (क्लेसमगपंए) ग्रेट बिट्रेन के डिपार्टमेन्ट ऑफ हैल्थ एडोप्टेड लर्निंग डिसएबिलिटी के द्वारा लर्निंग डिसएविलिटी शब्द को मानसिक विक्षिप्तता के रूप में सन्दर्भित किया गया है। परन्तु लम्बी परिचर्चा के पश्चात विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसके लिए सर्वाधिक उपयुक्त शब्द इन्टेलेक्चुअल डिसएविलिटी अर्थात बौद्धिक अक्षमता बताया। इसलिए अधिगम अक्षमता वाले बालक विभिन्न क्षेत्रों में योग्य हो सकते है। एक बालक सदैव स्वयं को एक सफलता के दर्पण में देखना चाहता है। वह समाज में प्रशंसा का पात्र बनना चाहता है। परन्तु अधिगम की अक्षमता के कारण वह अपने इस उद्देश्य की प्राप्ति नहीं कर पाता। इस दृष्टि से अधिगम अक्षमता वाले बालकों की शैक्षिक उपलब्धि एक गम्भीर समस्या है।

शोधार्थी के मन में यह जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक अधिगम अक्षमता को निर्धारित करने में क्या शैक्षिक उपलब्धि छात्रों की अधिगम अक्षमता को प्रभावित करती है, क्या आत्म प्रत्यय का अधिगम अक्षमता को प्रभावित करता है ? क्या चेतना

विज्ञान अधिगम अक्षमता को निर्धारित करती है ? क्या तर्क शक्ति अधिगम अक्षमता को प्रभावित करती है आदि प्रश्नों का उत्तर जानने के लिए शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध समस्या का चयन किया है कि शैक्षिक अधिगम अक्षमता को निर्धारित करने में क्या शैक्षिक, उपलब्धि आत्म–प्रत्यय, चेतनता एवं तर्क शक्ति की कोई भूमिका होती है? का भी अध्ययन किये जाने का प्रयास किया जायेगा ?

1.3 समस्या कथन

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक अधिगम अक्षमता को निर्धारित करने में शैक्षिक उपलबिध, आत्मप्रत्यय, चेतनता एवं तर्क शक्ति की भूमिका का अध्ययन।

1.4 समस्या में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या

1.4.1 उच्च माध्यमिकः–

उच्च माध्यमिक शब्द से तात्पर्य है कि वे शैक्षिक संस्थायें जहाँ पर कक्षा 11 एवं 12 की कक्षायें संचालित हैं और उन्हें उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा परिषद इलाहाबाद तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद नई दिल्ली से मान्यता प्राप्त है, से है।

1.4.2 छात्र

छात्र शब्द से अभिप्राय उत्तर प्रदेश शासन के आगरा मण्डल आगरा में उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद इलाहाबाद एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद नई दिल्ली से मान्यता प्राप्त शैक्षिक संस्थाओं एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 11 एवं 12 के छात्र–छात्राओं से है।

1.4.3 शैक्षिक अधिगम अक्षमता

शैक्षिक अधिगम अक्षमता से आशय है कि वे बालक जो लिखने बोलने, सुनने, समझने, सम्प्रेषण तथा गणितीय गणना करने में सामान्य बुद्धि रखते हुए भी अक्षमता का अनुभव करते हैं। साथ ही कुछ विशेष शैक्षिक समस्याओं से ग्रसित है जैसे– स्वाद हीनता, संख्या विषयक अक्षमता, सम्प्रेषण तथा पढ़ने एवं लिखने में अक्षम है, से है।

कार्यात्मक परिभाषा

रजिस्टर (1977) के शब्दों में–

"विशिष्ट अधिगम अयोग्यता का अर्थ एक अथवा एक से अधिक आधारभूत मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के असन्तुलन से है जिसमें पढ़ने एवं लिखने, सुनने एवं बोलने की अयोग्यता शामिल है यह असन्तुलन अधिकाशतः बालक–बालिकाओं की सुनने, सोचने पढ़ने, लिखने एवं गणितीय गणनाओं की अयोग्यता के रूप में दिखायी देने से है।"

1.4.4 शैक्षिक उपलब्धि

शैक्षिक उपलबिध से अभिप्राय है वह स्थान जहाँ पर विभिन्न विषयों अथवा पाठ्यक्रमों का संचालन व्यक्ति के शान, संयम एवं कौशल के मापन एवं मूल्यांकन के लिए किया जाये, से है।

कार्यात्मक परिभाषा

डॉ. के.एस. मिश्रा (1984) के शब्दों में

"शैक्षिक उपलब्धि किसी प्रमापीकृत परीक्षण पर व्यक्ति के प्राप्तांकों को बताती है।" यहाँ शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य कक्षा 11 एवं कक्षा 12 के वार्षिक परीक्षा में प्राप्तांकों के सम्पूर्ण योग से है।

1.4.5 आत्म प्रत्यय

आत्म प्रत्यय से तात्पर्य है, वे सभी प्रत्यय, विश्वास, अभिवृत्तियाँ एवं भावनायें जिसे मनुष्य स्वयं की विशेषताओं के एक भाग के रूप में देखता है। यह उसके स्वास्थ्य, शारीरिक बनावट, मानसिक क्रियाओं, शैक्षिक स्तर, व्यवहारिक विशेषताओं, मानसिक स्वास्थ्य, सवेंगात्मक प्रवृत्तियों और सामाजिक–आर्थिक स्तर आदि के सन्दर्भ में विचार करने से है।

कार्यात्मक परिभाषा

रैमी, (1974) के अनुसार– "आत्म प्रत्यय एक ऐसा मानचित्र है जिसकी सहायता से व्यक्ति स्वंय को समझाने का प्रयास करता है। विशेषतः आपत्ति दुविधा की स्थिति में स्वयं को समझलेता है।"

1.4.6 चेतनता

चेतनता से अभिप्राय है चेतनता कुछ जीव धारियों में स्वंय के और अपने आस–पास के वातावरण के तत्वों का बोध होने, उन्हें समझने तथा उनकी बातों का मूल्यांकन करने की शक्ति का नाम है।

कार्यात्मक परिभाषा

विज्ञान के अनुसार

"चेतना व अनुभूति है जो मस्तिष्क में पहुँचने वाले अभिगामी आवेगों से उत्पन्न होती है। इन आवेगों का अर्थ तुरन्त अथवा वाद में लगाया जाता है।"

1.4.7 तर्क शक्ति

तर्क शक्ति से आशय है विभिनन प्रकार की अवधारणाओं, संकल्पनाओं निर्णयों एवं सिद्धान्तों आदि में वस्तु जगत को परावर्तित करने वाली प्रक्रियाओं से है जो विभिन्न प्रकार की समस्याओं के समाधान करने से जुड़ी हुई है।

कार्यात्मक परिभाषा

गेटस (1947) के शब्दों

"तर्क एक ऐसी संज्ञा है जो उद्देश्यपूर्ण नियन्त्रित तथा चयनित चिन्तन के लिए प्रयुक्त होती है।"

मन (1967) के शब्दों में

"तर्क उन समस्याओं के समाधान के लिए, अतीत के अनुभवों को इकट्ठा करने का प्रयास है जिसको पिछले समाधानों की पुनरावृत्ति मात्र से समस्याओं का समाधान नहीं किया जा सकता।"

यहाँ तर्क शक्ति से आशय है कि विविध अवधारणाओं, सकल्पनाओं, निर्णयों एवं सिद्धान्तों आदि में छात्र–छात्रायें अपनी तर्क शक्ति के माध्यम से उस समस्या का समाधान किस प्रकार खोजते हैं, से है।

1.5 अध्ययन के उद्देश्य

1. उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक अधिगम अक्षमता का अध्ययन करना।

2. उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
3. उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की आत्म प्रत्यय का अध्ययन करना।
4. उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की चेतनता का अध्ययन करना।
5. उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की तर्क शक्ति का अध्ययन करना।
6. शैक्षिक अधिगम अक्षमता को निर्धारित करने में शैक्षिक उपलब्धि की भूमिका का अध्ययन करना।
7. शैक्षिक अधिगम अक्षमता को निर्धारित करने में आत्म प्रत्यय की भूमिका का अध्ययन करना।
8. शैक्षिक अधिगम अक्षमता को निर्धारित करने में चेतनता की भूमिका का अध्ययन करना।
9. शैक्षिक अधिगम अक्षमता को निर्धारित करने में तर्क शक्ति की भूमिका का अध्ययन करना।

1.6 अध्ययन की परिकल्पना

1. अधिगम अक्षमता को निर्धारित करने में शैक्षिक उपलब्धि की कोई भूमिका नहीं होगी।
2. अधिगम अक्षमता को निर्धारित करने में आत्म प्रत्यय की कोई भूमिका नहीं होगी।
3. अधिगम अक्षमता को निर्धारित करने में चेतनता की कोई भूमिका नहीं होगी।
4. अधिगम अक्षमता को निर्धारित करने में तर्क शक्ति की कोई भूमिका नहीं होगी।

1.7 अध्ययन का परिसीमांकन

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा परिषद् इलाहाबाद एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद से मान्यता प्राप्त विद्यालयों तक ही सीमित रखा जायेगा।
2. प्रतिदर्श में उत्तर प्रदेश राज्य के आगरा मण्डल आगरा में स्थिति सभी जनपदों (आगरा, मथुरा, फिरोजाबाद, मैनपुरी) के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में स्थिति उच्च माध्यमिक स्तर की शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्र–छात्राओं को ही शामिल किया जायेगा।

3. प्रस्तुत अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर की शिक्षा प्रदान कर रहे सरकारी, अर्द्ध सरकारी एवं मान्यता प्राप्त उच्च माध्यमिक विद्यालयों/संस्थाओ में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं को ही शामिल किया जायेगा।

4. प्रस्तुत शोध अध्ययन में उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद इलाहाबद एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद नई दिल्ली से मान्यता प्राप्त उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 11 एवं कक्षा 12 के 600 छात्रों (300 छात्र एवं 300 छात्राओं) को ही शामिल किया जायेगा।

1.8 अध्ययन की विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि (Disecriptive Survey Method) का प्रयोग किया जायेगा।

वेस्ट (1972) के शब्दों में

वर्णनात्मक शोध वर्तमान स्थिति की व्याख्या एवं विवेचन प्रस्तुत करना है इसका सम्बन्ध उन स्थितियों व सम्बन्धों से है जिनका वर्तमान में अस्तित्व है अथवा उन व्यवहारों से है जो कि प्रचलित है व उन दृष्टिकोणों से है जिनका प्रचलन है तथा उन प्रभावों से है जिन्हें अनुभव किया जाता है अथवा उन उपनीतियों से है, जो विकासशील है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन को सम्पादित करने के लिए वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि (Disecriptive Survey Method) को केन्द्र बिन्दु मानकर ही प्रस्तुत शोध सम्पादित किये जाने का प्रयास किया जायेगा।

1.9 न्यादर्श चयन

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रतिदर्श का चयन निम्न रूप में किया जायेगा।

1.9.1 जनसंख्या

आगरा मण्डल आगरा में स्थिति उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा परिषद् इलाहाबद एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् नई दिल्ली से मान्यता प्राप्त उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् सभी

छात्र–छात्राओं को सम्मिलित किया जायेगा।

1.9.2 प्रतिदर्श

आगरा मण्डल आगरा में स्थिति विभिन्न जनपदों (आगरा, मथुरा, फिरोजावाद, मैनपुरी) में स्थिति उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा परिषद् इलाहाबद एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् नई दिल्ली से मान्यता प्राप्त उच्च माध्यमिक विद्यालयों एवं शैक्षिक संस्थाओं से 300 छात्र एवं 300 छात्राओं का चयन प्रतिदर्श की सौद्देश्य विधि (Purposive Sample Method) के माध्यम से किया जायेगा।

1.10 अध्ययन के चर

प्रस्तुत शोध अध्ययन में अध्ययन के चरों कों दो भागों में विभक्त किया गया है।

स्वतन्त्र चर– अधिगम अक्षमता

आश्रित चर– शैक्षिक उपलब्धि, आत्म प्रत्यय, तर्क शक्ति, चेतनता।

1.11 उपकरण

वर्तमान अध्ययन के लिए निम्नलिखित उपकरण का उपयोग किया गया।

1. अधिगम क्षमता के लिए शोधकर्ता कर्ता द्वारा स्वयं निर्मित उपकरण का प्रयोग किया जायेगा।
2. तर्क शक्ति के लिए शोधकर्ता कर्ता द्वारा स्वयं निर्मित उपकरण का प्रयोग किया जायेगा।
3. चेतनता के लिए शोधकर्ता कर्ता द्वारा स्वयं निर्मित उपकरण का प्रयोग किया जायेगा।
4. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अध्ययन हेतु कक्षा 11 व 12 के बोर्ड परीक्षा के परीक्षाफल को आधार माना जायेगा।
5. आत्म प्रत्यय के अध्ययन हेतु सारस्वत के आत्म प्रत्यय मापनी का प्रयोग किया जायेगा।

1.12 सांख्यिकीय प्रविधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सांख्यिकीय प्रविधि के रूप में निम्न सांख्यिकी का प्रयोग किया जायेगा।

1.12.1 मध्यमान (Mean)

1.12.2 मानक विचलन (S.D.)

1.12.3 प्रतिगमन गणना (Regression)

1.13 अध्ययन का औचित्य

विज्ञान के आश्चर्यजनक विकास व तकनीकी के रूप में उसके समाज में सार्वभौमिक स्तर पर व्यापक उपयोग के द्वारा मानव जीवन की भौतिक सुख–सुविधाओं में वृद्धि हुई है। यही कारण है कि परम्परागत चेतनता, तर्क–शक्ति को शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में नवीन सचेतना प्रदान करने की आवश्यकता अनुभव हुई, क्योंकि आज सभी नैतिक, आध्यात्मिक एवं चारित्रिक मानदंड़ों में क्रान्तिकारी परिवर्तन हो रहे हैं।

आज इक्कीसवीं सदी की ओर बढ़ते चरण प्रतिपल आने वाले कल के प्रति जागरूक रहने का आग्रह कर रहे हैं। भारतीय शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में विकसित होने वाले बालक से अपेक्षाएं हैं कि वह परिस्थितियों का अवलोकन कर नीर–क्षीर विवेक का गुण पैदा करें और जीवन से तारतम्य स्थापित करता हुआ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ें, जिससे समाज और राष्ट्रहित में भी अपना समुचित योगदान दे सके। प्रस्तुत अध्ययन में उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर शोध कार्य करने की आवश्यकता अनुभव की गयी है क्या अधिगम अक्षमता के निर्धारक तत्व उन्हें प्रभावित तो नहीं करते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. **जिलियन, एल.ए., (2009)** : सेल्फ कॉन्सेप्ट ऑफ स्टूडेन्ट् सविद इन सेल्फ कॉन्टेड ऐनवारमेन्ट, इन्टरनेशनल डिजरटेशन एब्स्ट्रेक्ट।
2. **बिन्दु, सी.एम., (2009)** : सेल्फकॉन्सेप्ट एण्ड सोश्योपसर्नल एडजस्टमेन्टऑफ हियरिंगइम्पेयर्ड एण्ड नॉर्मल सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स, इण्डियन एजूकेशनल एब्स्ट्रेक्ट इश्यू (7,8) एन.सी.ई.आर.टी., नईदिल्ली।
3. **स्किनर,चार्ल्सई., (1978)** :एजूकेशनल साइकोलॉजी, अनमोल पब्लिकेशन नई दिल्ली।
4. लोकनन्दाजी, एण्ड कुसुमाए, (2000) : लर्निंग डिसएबिलिटीज डिस्कवरी पब्लिशिंग हाऊस, नईदिल्ली।
5. **चैंगरॉस के.,(2001)** : लाइसस्ट्रैस एण्ड डिप्रैस्डमूड एमांग एडोलोसेष्ट एक्जामिंनिंग ए कॉगनिटिव एफैक्टिव मैडिएशन मॉडल, जनरल ऑफ सोशल एण्ड क्लीनिकल साइकोलाजी।
6. **लोकनन्दाजी. (2000)** : लर्निंग डिएबिलिटीज, डिस्कवरी पब्लिशिंग हाऊस, नईदिल्ली, (2000)
7. **चैंगरॉस के (2001),** लाइफस्ट्रैस एण्ड डिप्रैस्डमूड एमोंग एडोलोसेण्डः एक्जामिनिग ए कॉगनिटिव एफैक्टिव मैडिएशन मॉडल, जनरल ऑफ सोशल एण्ड क्लीनिकल साइकॉलजि।
8. **एनीस, मीटी एम. (2002),** क्रानिक सोशलस्ट्रैस एण्ड डिप्रैसिव सिम्टम्सइन एडोलोसेण्टस, http://hdl.handle.net.
9. **एकगर, सिआरची (2003),** लर्नड रिसोर्स फुलनै समोड्रेट्स एण्ड रिलेशनशिप विटवीन एकेडमिक स्ट्रैस एण्ड एकेडमिक परफॉमेन्स, एजूकेशनल साइकॉलजि।

10. **बैरेट एनी., ई. टर्नरआर. जे. (2003),** फैमिलीस्ट्रक्चर एण्ड मैण्टलहेल्थ : द मेडिएटिंग इफैक्ट्स ऑफ सोशियो–इकनौमिक स्टेटस, फैमिली प्रोसेसज एण्ड सोशल स्ट्रैस, जनरल ऑफ हैल्थ एण्ड सोशल विहेवियर।

11. **मिश्राआर. (2004),** कॉलेज स्टूडेन्ट् सस्ट्रैस एण्ड इट्स रिलेशन टू देयर एग्जाइटी टाइम मैनेजमेण्ट एण्ड लेजर सैटिशफैक्शन।

12. **हिंदी एम. इण्डेविटजेन, डेवरा (2004),** रिलेशनशिप एमोंग एडोलोसेण्ट्स ऑफ सोशल एग्जाइटी एण्ड डिप्रैसिव सिमटम्स, जनरल ऑफ एग्जाइटी डिसआर्डर।

13. **हिम्यूपैट्रिक एडवर्ड (2004),** रोल ऑफ स्ट्रैस एण्ड एग्जाइटी इन स्टूडेन्टस अफेयर्सः ए फोकस ऑन मिडिल मैनेजर्स, अमेरिकन जनरल ऑफ हेल्थ स्टडीज, 70(4): 420–421

14. **लुडविंगडेनिस (2004),** एक्सप्लोरिंग द एफैक्टस ऑफ स्ट्रैस लेवन आन द राइटिंग एचीवमेण्ट ऑफ एडोलोसेण्टस http://hdl.handle.net.

15. **चट्टोपाध्याय, आर., (2004),** इम्पैक्ट ऑफ डिप्रैशन, एग्जाइटी एण्ड स्ट्रैस ड्यूरिंग एक्जामिनेशन ऑन नैचुरल लैंग्वेज पैटर्न ऑफ फीमेल स्टूडेन्ट्स,साउनवीर, नेशनल सेमिनार ऑन इन हान्सिंग ह्यूमन पोटेन्शल साइकोलौजिकल पर्स पैक्टिव, अक्टूबर 1–2

16. **थॉमसन ई. डेविस (2005),** हेल्थरिलेटेड क्वालिटी ऑफ लाइफ इन कालेज अण्डरग्रजुएट विद लर्निंग डिएबिलिटीज : द मेडीशनल रोल ऑफ एग्जाइटीसैडनैस एण्ड स्ट्रैस, जनरल ऑफ साइकोपैथोलॉजि एण्ड विहेविरलः एसिसमेण्ट,31(2): 228–234

17. **एन. हुसैन (2005),** लाइफ स्ट्रैसइन ए ट्राइव लबरिया ऑफ पाकिस्तान, ब्रिटिश जनरल ऑफ साइकेट्री, 190 (5) : 36–41

18. **कैपलसैंगसन (2005),** एस्टडीऑफ द एक्जामिनेशन स्ट्रेस एण्ड एकेडमिक परफॉमिन्स ऑफ द चिल्ड्रेन विद इण्टलैक्चुअल डिएबिलिटी, डैसरटेशन एव्सट्रैक्ट 54 (2) : 101—102

19. **ढिल्लनमेघा, वासुनन्दिता (2005),** स्ट्रैस इनमदर्स एण्ड कादर्स ऑफ चिल्ड्रैन एडोलोसेण्टस विद इण्टलैक्चुअल उिसएबिलिटि, नेशनल एकेडमी ऑफ साइकॉलजि इण्डिया 53 (3) : 309—313

20. **धाडेरी, ए., वेंकटेशकुमार (2005),** डिप्रैशन, एग्जाइटी एण्ड स्ट्रैस एमोंग द इण्डियन एण्ड ईरानियन स्टूडेन्ट् सजनरल ऑफ इण्डियन एकेडमी ऑफ प्लाइन्ट साइकॉलजि, 35 (1) : 33—7

21. **आइवास्ट्रैनेडोवा (2006),** स्ट्रैस एण्ड रिजिलिअन्स इन द फैमिलीज ऑफ चिल्ड्रेन विद स्पैसिफिक लर्निंग डिसएबिलिटी, ब्रिटिश जनरल ऑफ एजूकेशन।

22. **अग्रवालशिल्पा (2006),** स्ट्रैसफुल लाइफ इवैन्ट्स एमोंग एगलोसेण्टस : द डेवलपमेण्ट ऑफ ए न्यूमेजर, इण्डियन जनरल ऑफ साइकोलजिकल स्टडीज, 29 (2)

23. **पण्डित के.एल. (2006),** रोलऑफ एग्जाइटी इन लर्निंग एण्ड एकेडमिक एचीवमेण्ट ऑफचिल्ड्रैन http://hdl.handle.net.

24. **फैनी एम. (2006),** स्ट्रैस एमोंग सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स इन हॉंग—कॉम एण्ड इट्स रिलेशनशिप टू एकेडिमिक पर मॉमेन्ससी.यू.एच.के. (CUHK) एजूकेशनजनरल।

25. **डौरटेची, जे. उनरास एवं कैसीस्क्रो फील्ड (2007),** सेल्फपर सीब्ड काम्पिटेन्स एण्ड प्रॉसपैक्टिव चेन्ज इन डिप्रैशन एण्ड सोशल एग्जाइटी, जनरल ऑफ विहेवियर धैरपी एण्ड एक्सपैरीमेण्टल साइकैट्री, 40 (2) : 329—337

26. **कुरूविला, के.एस. (2007),** पॉवर्टी सोशल स्ट्रैस एण्ड मैण्टलहैल्थ, इण्डियन जनरल ऑफ मैडिकल रिसर्च 64 (5) : 67—69